अध्याय

10

नेता जी का चश्मा

© JCERT not to be republished

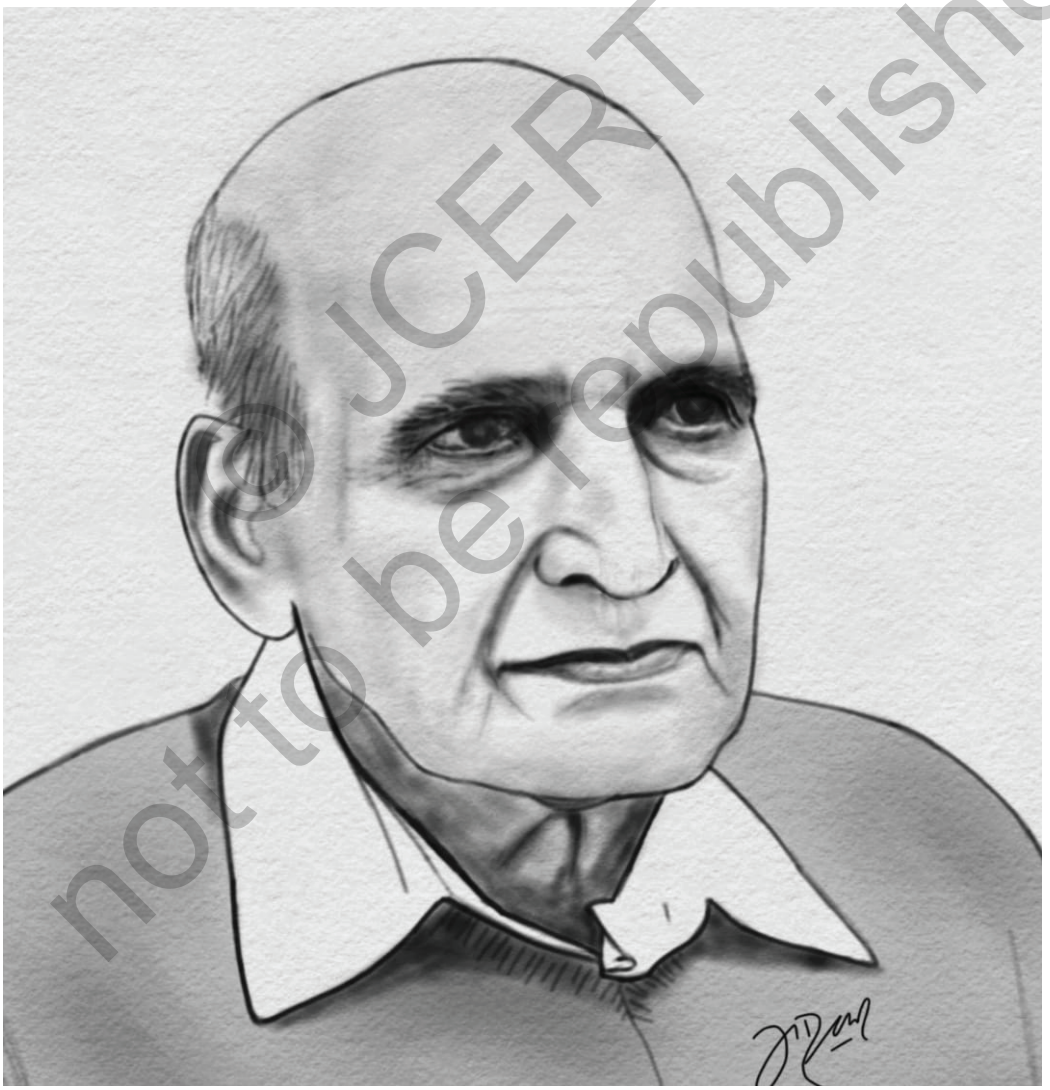

हालदार साहब

लेखक परिचय

स्वयं प्रकाश

जन्म :-20 जनवरी सन् 1947 ई.
इंदौर,मध्य प्रदेश (ननिहाल)
पैतृक आवास — अजमेर (राजस्थान)
सन् 1962 ई. में हायर सेकेंडरी
सन् 1966 ई. में मैकेनिकल इंजीनियरिंग
मृत्यु 8 दिसंबर सन 2019 ई.

साहित्यिक परिचय :-
कहानी संग्रह :- मात्रा और भार 1975 ई.
सूरज कब निकलेगा 1981 ई.
आएंगे अच्छे दिन भी 1991 ई.
अगले जन्म छोटू 2002 ई.
उस्ताद 2015 ई.

उपन्यास
चलते जहाज पर 1982 ई.
ज्योति रथ के सारथी 1987 ई.
उत्तर जीवन कथा 1993 ई.
बीच में विनय 1994 ई.
इंधन 2004 ई.

निबंध —
शांत सुखाय 1983 ई.
दूसरा पहलू 1990 ई.
रंगशाला में एक दोपहर 2002 ई.
क्या आप सांप्रदायिक हैं 2011 ई.

नाटक —
फिनिक्स 1980 ई.

रेखाचित्र —
हम सफरनामा 2000 ई.

© JCERT not to be republished

पाठ-परिचय

प्रस्तुत पाठ देश -प्रेम की भावना से प्रेरित है, जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि देश सीमाओं से बंधा भू-भाग ही नहीं होता, अपितु उस भू-भाग में रहने वाले सभी नागरिकों,नदियों,पहाड़ों,पेड़- पौधों,वनस्पतियों,पशु -पक्षियों के सम्मिलित रुप का नाम देश है।

इस कहानी का मुख्य पात्र हालदार साहब अपनी कंपनी के काम से हर 15 वें दिन एक कस्बे से गुजरते थे।

उस कस्बे के मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की एक संगमरमर की मूर्ति लगी हुई थी, जिसे हालदार साहब गुजरते हुए हमेशा देखा करते थे।

हालदार साहब ने जब पहली बार उस मूर्ति को देखा तो उन्हें लगा कि शायद इसे बहुत जल्दीबाजी में बनवाया गया है क्योंकि मूर्ति तो संगमरमर की थी लेकिन चश्मा रियल था।

अगली बार जब हालदार साहब उस चौराहे से गुजरे तो उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मूर्ति पर दूसरा चश्मा लगा हुआ था। हालदार साहब ने पान वाले से इसका कारण पूछा तो पान वाले ने बताया कि कैप्टन इस मूर्ति का चश्मा बदलता रहता है।

कैप्टन की बात सुनकर हालदार साहब को लगा कि कैप्टन कोई भूतपूर्व सैनिक या आजाद हिंद फौज का कोई सिपाही या फिर नेताजी सुभाष चंद्र बोस का कोई साथी होगा।

6 परंतु इस संबंध में पूछने पर पान वाले ने उसका मजाक उड़ाते हुए कहा कि— नहीं साब! वो लँगड़ा क्या जाएगा फौज में।पागल है पागल!

7 उसी समय हालदार साहब ने देखा कि कैप्टन एक बेहद मरियल — सा लंगड़ा आदमी है जो सिर पर गाँधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में छोटी— सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टंगे बहुत से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था।

8 कैप्टन चश्मे का फेरी लगाता है।यदि किसी ग्राहक ने मूर्ति के चश्मे जैसा फ्रेम माँगा तो वह उस फ्रेम को वहाँ से उतारकर ग्राहक को दे देता और मूर्ति पर नया फ्रेम लगा देता है।

9 हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रते रहे और नेता जी की मूर्ति में बदलते हुए चश्मों को देखते रहे। कभी गोल चश्मा होता, तो कभी चौकोर, कभी लाल, कभी काला, कभी धूप का चश्मा, कभी बड़े काँचों वाला गोगो चश्मा।.. पर कोई — न — कोई चश्मा होता जरूर ... उस धूलभरी यात्रा में हालदार साहब को कौतुक और प्रफुल्लता के कुछ क्षण देने के लिए।

© JCERT not to be republished

मूर्ति के पीछे की कहानी की जानकारी हालदार साहब को पान वाले से मिली कि मूर्तिकार कम समय होने के कारण चश्मा नहीं बना पाया जिसके कारण बिना चश्मे के ही मूर्ति को लगा दिया गया। बिना चश्मे वाली मूर्ति कैप्टन को व्यथित करती थी इसलिए वह अपने बेचने वाले चश्मों में से एक चश्मा नेता जी की मूर्ति पर लगा दिया करता था।

फिर एक बार ऐसा हुआ कि मूर्ति के चेहरे पर कोई भी, कैसा भी चश्मा नहीं था। उस दिन पान की दुकान भी बंद थी। चौराहे की अधिकांश दुकानें बंद थी।

अगली बार भी मूर्ति की आँखों पर चश्मा नहीं था। हालदर साहब ने पान खाया और धीरे से पान वाले से पूछा — क्यों भाई, क्या बात है ? आज तुम्हारे नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं है ? पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झूकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला — साहब कैप्टन मर गया।

हालदार साहब बहुत दुःखी हुए और अगली बार वहाँ नहीं रुकने का फैसला किया क्योंकि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिस्थापित रहेगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा। ... क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया। ... और कैप्टन मर गया ।

लेकिन आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ़ उठ गईं। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, रोको! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारा। रास्ता चलते लोग देखने लगे । जीप रुकते—न—रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़— तेज़ कदमों से मूर्ति की तरफ़ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए।

मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा— सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं।

हालदार साहब भावुक हैं इतनी— सी बात पर उनकी आँखें भर आई।

शब्दार्थ—

सिलसिला - क्रम,

एक ठो - एक,

सम्मेलन - सभा,

उपलब्ध बजट - खर्च करने के लिए प्राप्त धन,

ऊहापोह - अनिश्चय की स्थिति में मन में उत्तपन्न होने वाला तर्क— वितर्क,

© JCERT not to be republished

प्रतिमा - मूर्ति,

चिट्ठी-पत्री - पत्र -व्यवहार,

स्थानीय - उसी क्षेत्र में निवास करने वाला,

कौतुक भरी - उत्सुकता से भरी,

दुर्दमनीय - जिसे दबाया ना जा सके,

खुशमिज़ाज़ - प्रशन्न चित्त वाला,

गिराक - ग्राहक,

किदर - किधर,

आहत - दु:खी,

दरकार - आवश्यकता,

ओरिजनल - मूल,

द्रवित करने वाली - पिघलाने वाली,

पारदर्शी - जिसके आर -पार देखा जा सके,

नतमस्तक - विनीत भाव से सिर झुकाना,

भूतपूर्व - पहले का,

अवाक् रह जाना - आश्चर्यचकित रह जाना,

प्रफुल्लता - खुशी,

कौम - जाति,

होम करना - सब कुछ लुटा देना,

हृदयस्थली - बीच में स्थित स्थान,

प्रतिष्ठापित - स्थापित,

भावुक - भावों को वशीभूत करने वाला

प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

उत्तर :- चश्मेवाला न तो सेनानी था, न ही वह नेताजी का साथी था और न आज़ाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही। फिर भी लोग उसे 'कैप्टन' कहकर बुलाते थे। उसे देशभक्तों से बहुत प्रेम था क्योंकि, उसके अंदर देशभक्ति की भावना कूट-- कूटकर भरी हुई थी। वह नेताजी का अधिक सम्मान करता था इसलिए वह बिना चश्मेवाली नेताजी की मूर्ति देखकर दुखी होता था। अतः वह उनकी मूर्ति को बार— बार चश्मा पहनाकर उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करता था। लोग उसकी देशभक्ति की भावना को देखकर व्यंग्य रूप में उसे कैप्टन कहकर पुकारते थे।

प्रश्न 2.हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा —-

1. हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे ?
2. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है ?
3. हालदार साहब इतनी - सी बात पर भावुक क्यों हो उठे ?

© ICERT not to be republished

उत्तर-1. हालदार साहब इसलिए मायूस हो गए थे, क्योंकि वे सोचते थे कि कस्बे के चौराहे पर मूर्ति तो होगी पर उसकी आँखों पर चश्मा न होगा। अब कैप्टन तो जिंदा है नहीं, जो मूर्ति पर चश्मा लगाएगा। देशभक्त हालदार साहब को नेताजी की चश्माविहीन मूर्ति उदास कर देती थी।

2. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि देश में देशप्रेम एवं देशभक्ति की भावना अभी भी समाप्त नहीं हुई है। नई पीढ़ी के बच्चों द्वारा किया गया कार्य स्वस्थ भविष्य का संकेत है। उनमें राष्ट्र प्रेम के बीज अंकुरित हो रहे हैं।

3. हालदार साहब सोच रहे थे कि कैप्टन के न रहने से नेताजी की मूर्ति चश्माविहीन होगी, परंतु जब यह देखा कि मूर्ति की आँखों पर सरकंडे का चश्मा लगा हुआ है तो उनकी निराशा आशा में बदल गई। उन्होंने समझ लिया कि युवा पीढ़ी में देशप्रेम और देशभक्ति की भावना है जो देश के लिए शुभ संकेत है। यह बात सोचकर वे भावुक हो गए।

प्रश्न 3.आशय स्पष्ट कीजिए —

" बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर- गृहस्थी- जवानी- जिंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।"

उत्तर — उक्त पंक्ति का आशय यह है कि बहुत से लोगों ने अपने देश के लिए अपना घर —गृहस्थी,जवानी —जिंदगी आदि सब कुछ बलिदान कर दिया। कुछ लोग उनके बलिदान की प्रशंसा न करके ऐसे देशभक्तों का उपहास उड़ाते हैं। लोगों में देशभक्ति की ऐसी घटती भावना निश्चित रूप से निंदनीय है। ऐसे लोग इस हद तक स्वार्थी होते हैं कि उनके लिए अपना स्वार्थ ही सर्वोपरि होता है। वे अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए देशद्रोह करने तक को तैयार रहते हैं।

प्रश्न 4. पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर— पानवाला एक काला, मोटा और खुशमिजाज आदमी था। उसकी तोंद निकली हुई थी और उसके सिर पर गिने — चुने ही बाल बचे थे। उसका मुँह पान से हमेशा भरा रहता था जिससे उसके दाँत लाल - काले हो गए थे। वह अपने कंधे पर हमेशा एक कपड़ा रखता था जिससे रह - रह कर अपना चेहरा साफ़ करता रहता था।जब वह हँसता था तब उसकी लाल - काली बत्तीसी दिख पड़ती थी और उसकी तोंद थिरकने लगती थी।कस्बे के चौराहे पर उसकी पान की दुकान थी।वह वाक्पटु था और व्यंग्यात्मक बातें कहने से नहीं चुकता।

प्रश्न 5. " वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल। "

कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखए।

उत्तर — कैप्टन के प्रति पानवाले ने टिप्पणी की थी कि "वो लँगड़ा क्या जाएगा फौज

© JCERT not to be republished

में। पागल है पागल!" उसकी यह टिप्पणी व्यंग्यभाव से परिपूर्ण है और नैतिक मूल्यों के विरुद्ध है। शारीरिक रूप से चुनौती को स्वीकार किए हुए व्यक्ति का उड़ाया गया उपहास है, जो सर्वथा अनुचित ही नहीं अभद्रता का भी प्रतीक है। ऐसी टिप्पणी करना अशोभनीय एवं अनुचित व्यवहार को दर्शाता है। जबकि ऐसे देश- प्रेमी व्यक्तियों के प्रति हमारा व्यवहार स्नेह,सहयोग एवं सहानुभूति पूर्ण होना चाहिए।कैप्टन जैसे अपंग देशभक्त व्यक्ति के प्रति इस तरह का व्यंग्यात्मक कथन निंदनीय है।कैप्टन देशभक्तों का प्रतीक है। उसका उपहास उड़ाना देशभक्तों के सम्मान के विरुद्ध आवाज उठाना है। संभवत: पानवाला अपने कथन की गंभीरता से अपरिचित है।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 6 .निम्नलिखित वाक्य पात्रों की कौन --सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं —

1. हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते।
2. पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला—साहब! कैप्टन मर गया।
3. कैप्टन बार--बारे मूर्ति पर चश्मा लगा देता था।

उत्तर-1. हालदार साहब अपने कर्म के प्रति सजग तथा पान खाने के शौकीन थे। उनके मन में शहीदों और देशभक्तों के प्रति आदर की भावना थी। नेताजी की मूर्ति को रुककर ध्यान से देखना तथा चश्माविहीन मूर्ति को देखकर आहत होना इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। वे चाहते हैं कि युवा पीढ़ी में यह भावना और भी प्रबल हो।

2. पानवाला प्रायः कैप्टन चश्मेवाले का उपहास उड़ाया करता था, जिससे ऐसा लगता था जैसे उसके अंदर देशभक्ति का भाव नहीं है, पर जब कैप्टन मर जाता है तब उसके देशप्रेम की झलक मिलती है। वह कैप्टन जैसे व्यक्ति की मृत्यु से दुखी होकर हालदार को उसकी मृत्यु की सूचना देता है। ऐसा करते हुए उसकी आँखें भर आती हैं।
3. कैप्टन भले ही शारीरिक रूप से फ़ौजी व्यक्तित्व वाला न रहा हो पर मानसिक रूप से वह फ़ौजियों जैसी ही मनोभावना रखता था। उसके हृदय में देश प्रेम और देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी थी। नेताजी की चश्माविहीन मूर्ति देखकर वह आहत होता था और उस कमी को पूरा करने के लिए अपने सीमित आय से भी चश्मा लगा दिया करता था, ताकि नेताजी का व्यक्तित्व अधूरा न दिखे।

प्रश्न 7 .जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन—सा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए।

उत्तर-जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् रूप से नहीं देखा था तब तक

© JCERT not to be republished

उनके मानस पटल पर कैप्टन का व्यक्तित्व एक फ़ौजी व्यक्ति ' जैसा रहा होगा जो लंबे कदवाला मजबूत कद-काठी वाला हट्टा-कट्टा दिखता होगा। उसका चेहरा रोबीला तथा घनी मूंछों वाला रहा होगा। वह अवश्य ही नेताजी का साथी या आज़ाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही रहा होगा। वह हर कोण से फ़ौजियों जैसा दिखता होगा।

प्रश्न 8 कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर किसी न किसी क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने का प्रचलन—सा हो गया है —

1. इस तरह की मूर्ति लगाने के क्या उद्देश्य हो सकते हैं ?
2. आप अपने इलाके के चौराहे पर किस व्यक्ति की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे और क्यों ?
3. उस मूर्ति के प्रति आपके एवं दूसरे लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए?

उत्तर-(क) समाज सेवा, देश सेवा या ऐसे ही अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रसिद्ध व्यक्तियों की मूर्ति प्रायः कस्बों, चौराहों, महानगरों या शहरों में लगाई जाती हैं। ऐसी मूर्तियाँ लगाने का उद्देश्य सजावटी न होकर उद्देश्यपूर्ण होता है।इन प्रतिमाओं के प्रति हमारा निम्न उत्तरदायित्व होना चाहिए —

1. लोग ऐसे लोगों के कार्यों को जानें तथा उनसे प्रेरित हों।
2. लोगों में अच्छे कार्य करने की रुचि उत्पन्न हो और वे उसके लिए प्रेरित हों।
3. लोग ऐसे लोगों को न भूलें तथा उनकी चर्चा करते हुए युवा पीढ़ी को भी उनसे परिचित कराएँ।

(ख) मैं अपने इलाके के चौराहे पर भगवान बिरसा मुन्डा की प्रतिमा लगवाना चाहूँगा ताकि लोगों को विशेषकर युवा वर्ग को अपने देश,राज्य एवं समाज लिए कुछ कर गुजरने की प्रेरणा मिले। वे अपनी मातृभूमि पर आँच न आने दें और अपने जीते जी देश को गुलाम होने से बचाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने से भी न हिचकिचाएँ। इसके अलावा युवाओं में देश--प्रेम और देशभक्ति की भावना बलवती रहे।साथ ही सामाजिक जागरुकता के प्रति भी संवेदनशील रहें।

(ग) चौराहे या कस्बे में लगी समाजसेवी या अन्य उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति की प्रतिमा के प्रति हमारा तथा अन्य लोगों का यह उत्तरदायित्व होना चाहिए कि —

1. हम उसकी साफ़-सफ़ाई करवाएँ।
2. साल में कम से कम एक बार वहाँ ऐसा आयोजन करें कि लोग वहाँ एकत्र हों और उस व्यक्ति के कार्यों की चर्चा की जाए।
3. उस व्यक्ति के कार्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता बताते हुए उनसे प्रेरित होने के लिए लोगों से कहें।
4. मूर्ति के प्रति सम्मान भाव बनाए रखें।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 9. सीमा पर तैनात फ़ौजी ही देश—प्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी न किसी रूप में देश-प्रेम प्रकट करते हैं; जैसे-सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना, पर्यावरण संरक्षण आदि। अपने जीवन — जगत से जुड़े ऐसे और कार्यों का उल्लेख कीजिए और उन पर अमल भी कीजिए।

उत्तर- सीमा पर तैनात फ़ौजी विशिष्ट रूप में देश—प्रेम का परिचय देते हैं। उनका देश—प्रेम अत्यंत उच्चकोटि का और अनुकरणीय होता है, परंतु हम लोग भी विभिन्न कार्यों के माध्यम से देश—प्रेम को प्रकट कर सकते हैं। ये काम हैं- अपने कर्तव्यों का पूरी निष्ठा से पालन करना,सरकारी संपत्ति को क्षति न पहुँचाना, बढ़ते प्रदूषण को रोकने में मदद करना, अधिकाधिक वृक्ष लगाना, पर्यावरण तथा अपने आस—पास की सफ़ाई रखना, पानी के स्रोतों को दूषित होने से बचाना, वर्षा जल का संरक्षण करना, बिजली की बचत करना, कूड़ा इधर—उधर न फेंकना, नदियों को प्रदूषण मुक्त बनाए रखने का प्रयास करना, तोड़—फोड़ न करना, शहीदों एवं देशभक्तों के प्रति सम्मान रखना, सभी जाति,धर्म एवं भाषा आदि का सम्मान करना,लोगों के साथ मिल—जुलकर रहना आदि।

प्रश्न 10 निम्नलिखित पंक्तियों में स्थानीय बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, आप इन पंक्तियों को मानक हिंदी में लिखिए —

कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया।

उत्तर — मान लो कोई ग्राहक आ गया। उसे चौड़ा फ्रेम चाहिए। तो कैप्टन कहाँ से लाएगा? तो उसे मूर्तिवाला फ्रेम दे देता है और मूर्ति पर दूसरा फ्रेम लगा देता है।

प्रश्न 11.' भई खूब! क्या आइडिया है।' इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से क्या लाभ होते हैं ?

उत्तर-एक भाषा के शब्द जब ज्यों के त्यों दूसरी भाषा में आते हैं तो इससे भाषा सरल, सहज और बोधगम्य बनती है। वह अधिकाधिक लोगों द्वारा प्रयोग और व्यवहार में लाई जाती है। कुछ ही समय में ये शब्द उसी भाषा के बनकर रह जाते हैं।

© JCERT not to be republished